मेरी ख़ातिर

अल-मसीह के दुख की पेशगोई

hamārī ḳhātir. almasīh ke dukh kī peshgoī

For Us. The Prophecy of the Suffering Messiah

by Bakhtullah

[*Zinda Kalam 16*]

(Urdu—Hindi script)

© 2026 Chashma Media.

published and printed by
GWCS, New Delhi

Bible text is from UGV.

illus. https://www.freebibleimages.org/illustrations/rg-isaiah-53/.

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

फ़हरिस्त

हमारी ख़ातिर एक अजीब कामयाबी 1

हमारी ख़ातिर दुख 5

हमारी ख़ातिर जान की क़ुरबानी 8

हमारी ख़ातिर मौत पर फ़तह 12

यसायाह 52:13–53:12 15

ईसा मसीह की पैदाइश से सदियों पहले एक अनोखी पेशगोई क़लमबंद हुई। यह इतनी अजीब और ग़ैरमामूली थी कि लोग इसे पढ़ पढ़कर उलझन में पड़ गए।

► **वह क्यों उलझन में पड़ गए?**

इसलिए कि पेशगोई में एक अज़ीम हस्ती बयान की जाती है—ऐसी हस्ती जो अपनी जान अवाम के लिए क़ुरबान करेगी।

► **यह कौन-सी हस्ती थी जिसका ज़िक्र हुआ?**

लोग उसकी खोज लगा लगाकर थक गए। लेकिन सदियों बाद यह हस्ती ख़ुद सामने आई—ईसा मसीह जो मुल्के-इसराईल में पैदा हुआ। साफ़ ज़ाहिर हुआ कि यह पेशगोई उसे बयान करती है। आइए हम ग़ौर करें कि यह उसके बारे में क्या फ़रमाती है। पहली बात,

हमारी ख़ातिर एक अजीब कामयाबी

नबी फ़रमाता है,

> देखो, मेरा ख़ादिम कामयाब होगा।
> वह सरबुलंद, मुमताज़ और बहुत सरफ़राज़ होगा।

► **यहाँ ख़ुदा अपने ख़ादिम के बारे में क्या फ़रमाता है?**

यह कि मेरा ख़ादिम कामयाब होगा। वह बहुत सरफ़राज़ होगा। लेकिन इस ख़ादिम की कामयाबी अजीब है। नबी फ़रमाता है,

> तुझे देखकर बहुतों के रोंगटे खड़े हो गए।
> क्योंकि उसकी शक्ल इतनी ख़राब थी, उसकी सूरत किसी भी इनसान से कहीं ज़्यादा बिगड़ी हुई थी।
> लेकिन अब बहुत-सी क़ौमें उसे देखकर हक्का-बक्का हो जाएँगी,

> बादशाह दम बख़ुद रह जाएँगे।
> क्योंकि जो कुछ उन्हें नहीं बताया गया उसे वह देखेंगे,
> और जो कुछ उन्होंने नहीं सुना उसकी उन्हें समझ आएगी।

► **उसे देखकर लोगों के रोंगटे खड़े हो जाते हैं। ख़ादिम की कामयाबी क्यों चौंका देनेवाली है?**

इसलिए कि उसकी सूरत बहुत बिगड़ी हुई है।

► **फिर भी बहुत-सी क़ौमें उसे देखकर हक्का-बक्का हो जाएँगी। क्यों?**

इसलिए कि जो कुछ वह नहीं जानती थीं उसे वह देखेंगी और उन्हें समझ आएगी।

यों नबी एक अजीब क़िस्म का ख़ादिम पेश करता है। अजीब इसलिए कि गो उसकी शक्लो-सूरत दुख सहने से बिगड़ी हुई है फिर भी वह कामयाब और सरफ़राज़ होगा। अब नबी उसकी अजीब कामयाबी एक तस्वीर से पेश करता है। वह फ़रमाता है,

> उसके सामने वह कोंपल की तरह फूट निकला,
> उस ताज़ा और मुलायम शिगूफ़े की तरह
> जो ख़ुश्क ज़मीन में छुपी हुई जड़ से निकलकर
> फलने-फूलने लगती है।

► **यहाँ अल-मसीह का मुक़ाबला किस चीज़ से किया गया है?**

एक नरम कोंपल से जो ख़ुश्क ज़मीन में छुपी हुई जड़ से फूट निकली है।

► **इसमें क्या ख़ास बात है?**

यह कोंपल बंजर ज़मीन से निकली है, ऐसी जगह से जहाँ कुछ उग नहीं सकता। मतलब है ख़ादिम ऐसे ख़ानदान और बिरादरी से है जो देखने में कुछ नहीं है। न सिर्फ़ यह। लिखा है,

> न वह ख़ूबसूरत था, न शानदार।
> हमने उसे देखा
> तो उसकी शक्लो-सूरत में कुछ नहीं था
> जो हमें पसंद आता।

> उसे हक़ीर और मरदूद समझा जाता था।
> दुख और बीमारियाँ उसकी साथी रहीं,
> और लोग यहाँ तक उसकी तहक़ीर करते थे
> कि उसे देखकर अपना मुँह फेर लेते थे।
> हम उसकी कुछ क़दर नहीं करते थे।

► **क्या लोग उसे पसंद करते हैं?**

नहीं। वह उसे हक़ीर जानते हैं।

कितनी अजीब कामयाबी! न इस हस्ती की जड़ें शानदार लगती हैं, न उसकी शक्लो-सूरत। इसलिए अकसर लोग उसे हक़ीर जानते हैं। दूसरी बात,

हमारी ख़ातिर दुख

► **अब ध्यान दें : उसे क्यों दुख उठाना पड़ता है हालाँकि वह ख़ुदा का ख़ादिम है?**

नबी फ़रमाता है,

> लेकिन उसने हमारी ही बीमारियाँ उठा लीं,
> हमारा ही दुख भुगत लिया।
> तो भी हम समझे कि यह उसकी मुनासिब सज़ा है,
> कि अल्लाह ने ख़ुद उसे मारकर ख़ाक में मिला दिया है।
> लेकिन उसे हमारे ही जरायम के सबब से छेदा गया,
> हमारे ही गुनाहों की ख़ातिर कुचला गया।

> उसे सज़ा मिली ताकि हमें सलामती हासिल हो,
> और उसी के ज़ख़मों से हमें शफ़ा मिली।

- **ख़ादिम को क्यों दुख भुगतना पड़ता है? इसके पीछे ख़ुदा का क्या मक़सद है?**

  ख़ुदा का मक़सद यह है कि उसका ख़ादिम हमारा ही दुख भुगत ले। उसे हमारे ही जरायम के सबब से छेदा जाए, हमारे ही गुनाहों की ख़ातिर कुचला जाए।

- **लोगों का क्या जवाब है? क्या वह यह देखकर कि ख़ादिम हमारे लिए दुख उठा रहा है शुक्रगुज़ारी महसूस करते हैं?**

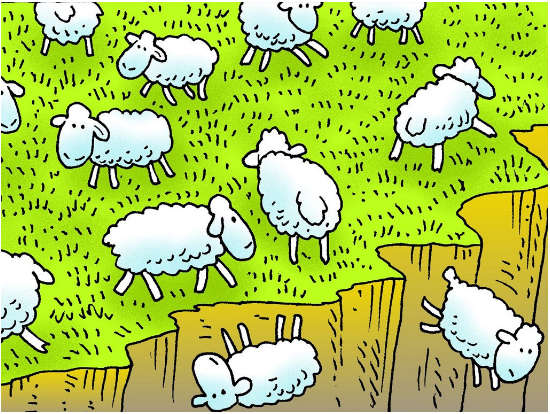

नहीं। वह समझते हैं कि यह उसकी मुनासिब सज़ा है, कि अल्लाह ने उसे सज़ा दी है।

► **लेकिन सज़ा मिलने का एक ख़ास मक़सद है। मक़सद क्या है?**

मक़सद यह है कि इनसान को सलामती हासिल हो, कि उसे शफ़ा मिले।

► **उन्हें क्यों सलामती और शफ़ा की ज़रूरत है?**

उनकी हालत बहुत ख़राब है। नबी फ़रमाता है,

> हम सब भेड़-बकरियों की तरह आवारा फिर रहे थे,
> हर एक ने अपनी अपनी राह इख़्तियार की।
> लेकिन रब ने उसे हम सबके क़ुसूर का निशाना बनाया।

► **लोगों का हाल क्या है?**

वह बिखरी हुई भेड़-बकरियों की तरह इधर-उधर फिर रहे हैं।

► **इसका क्या मतलब है?**

लोग ख़ुदा की राह पर नहीं चल रहे।

► **जवाब में रब क्या करता है?**

जवाब में वह अपने ख़ादिम को सबके क़ुसूर का निशाना बना देता है। ग़रज़, ख़ुदा इनसान को वह सज़ा नहीं देता जो उसे मिलनी चाहिए। इसके बजाए वह अपने ख़ादिम को इनसान के क़ुसूर का निशाना बना देता है। और यह सज़ा बहुत सख़्त है। इसलिए तीसरी बात,

हमारी ख़ातिर जान की क़ुरबानी

अब नबी, ख़ादिम का सुलूक तफ़सील से बयान करता है :

> उस पर ज़ुल्म हुआ,
> लेकिन उसने सब कुछ बरदाश्त किया और अपना मुँह न खोला,
> उस भेड़ की तरह जिसे ज़बह करने के लिए ले जाते हैं।
> जिस तरह लेला बाल कतरनेवालों के सामने ख़ामोश रहता है उसी तरह उसने अपना मुँह न खोला।

► **ख़ादिम पर ज़ुल्म होता है। ख़ुद तो वह मासूम है, बेगुनाह है। क्या वह नतीजे में नाराज़ या तलख़मिज़ाज हो जाता है?**

नहीं। वह नरमी से हमारे वास्ते सब कुछ बरदाश्त करता है।

► **उसका मुक़ाबला किस जानवर से किया जाता है?**

उस भेड़ से जिसे ज़बह करने के लिए लिया जा रहा है, और उस लेले से जिसके बाल कतरे जा रहे हैं।

► **इस भेड़ की क्या ख़ुसूसियत है?**

उसे ज़बह किया जा रहा है, फिर भी वह अपना मुँह नहीं खोलता। उसके बाल कतरे जा रहे हैं, फिर भी वह अपना मुँह नहीं खोलता। तब नबी फ़रमाता है,

> उसे ज़ुल्म और अदालत के हाथ से छीन लिया गया।
> उसके दौर के लोग—किसने ध्यान दिया
> कि उसका ज़िंदों के मुल्क से ताल्लुक़ कट गया,

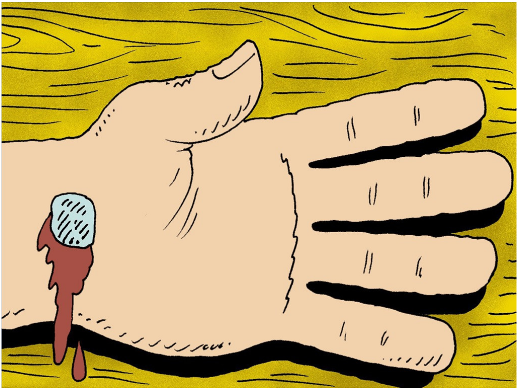

> कि वह मेरी क़ौम के जुर्म के सबब से सज़ा का निशाना बन गया?

► **ख़ुदा के ख़ादिम पर न सिर्फ़ ज़ुल्म होता है। इससे बढ़कर क्या होता है?**

उसे ज़ुल्म और अदालत के हाथ से छीनकर सज़ाए-मौत दी जाती है।

► **सज़ा उठाने का क्या मक़सद है?**

वह ख़ुदा के लोगों के जुर्म के बाइस सज़ा का निशाना बन जाता है।

► **क्या लोग जवाब में इसकी क़दर करते हैं?**

नहीं। लिखा है कि उन्होंने ध्यान भी न दिया।

मौत के बाद ख़ादिम को एक ख़ास तरीक़े से दफ़नाया जाता है। नबी फ़रमाता है,

> मुक़र्रर यह हुआ कि उसकी क़ब्र बेदीनों के पास हो,
> कि वह मरते वक़्त एक अमीर के पास दफ़नाया जाए,
> गो न उसने तशद्दुद किया,
> न उसके मुँह में फ़रेब था।

► **उसे किस तरह दफ़नाया जाता है?**

उसे बेदीनों के पास दफ़नाया जाता है, साथ साथ एक अमीर के पास भी।

► **क्या वह ऐसे लोगों के पास दफ़न होने के लायक़ है?**

नहीं। न उसने तशद्दुद किया है, न उसके मुँह में फ़रेब है।

► **क्या आपने एक और बात नोट की? लिखा है, उसे एक अमीर के पास दफ़नाया गया। यह क्यों?**

इसलिए कि सदियों बाद ईसा मसीह को एक अमीर की क़ब्र में दफ़नाया गया (देखिए मत्ती 27:57-60)।

लेकिन यह ख़ादिम न सिर्फ़ दुख सहता है। अपनी जान क़ुरबान करने के बाद वह फ़तह भी पाता है। इसलिए चौथी बात,

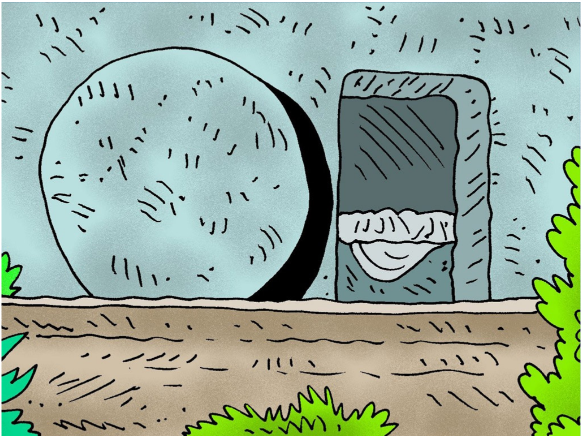

हमारी ख़ातिर मौत पर फ़तह

नबी फ़रमाता है,

> रब ही की मरज़ी थी कि उसे कुचले, उसे दुख पहुँचाए।
> लेकिन जब वह अपनी जान को क़ुसूर की क़ुरबानी के
> तौर पर देगा तो वह अपने फ़रज़ंदों को देखेगा,
> अपने दिनों में इज़ाफ़ा करेगा।
> हाँ, वह रब की मरज़ी को पूरा करने में कामयाब होगा।

► **अपनी जान क़ुरबान करने के बाद क्या होता है?**

वह अपने फ़रज़ंदों को देखकर अपने दिनों में इज़ाफ़ा करता है।

► **इसका क्या मतलब है?**

- वह क़ब्र में नहीं रहता। वह जी उठकर अपने दिनों में इज़ाफ़ा करता है।
- उसके फ़रज़ंद होते हैं। यह जिस्मानी फ़रज़ंद नहीं हैं। यह रूहानी फ़रज़ंद हैं, वह फ़रज़ंद जो उस पर ईमान लाकर नजात पाते हैं।

► **उस वक़्त ख़ादिम किस काम में कामयाब होता है?**

रब की मरज़ी को पूरा करने में। मतलब है लोगों के गुनाहों को अपने ऊपर उठाकर दूर करने में। और यह कामयाबी अच्छा फल लाता है। नबी फ़रमाता है,

> इतनी तकलीफ़ बरदाश्त करने के बाद उसे फल नज़र आएगा, और वह सेर हो जाएगा।

यह फल बयान किया जाता है :

> अपने इल्म से मेरा रास्त ख़ादिम बहुतों का इनसाफ़ क़ायम करेगा, क्योंकि वह उनके गुनाहों को अपने ऊपर उठाकर दूर कर देगा।

► **यह किस क़िस्म के फल हैं?**

लोगों का इनसाफ़ और रास्तबाज़ी।

► **लोगों की रास्तबाज़ी किस तरह फल हो सकती है?**

लोगों के गुनाहों को अपने ऊपर उठाकर दूर करने से वह उनका
इनसाफ़ क़ायम करता है। यानी वह उनमें वह रास्तबाज़ी पैदा करता
है जो वह ख़ुद अपने गुनाहों के बाइस पैदा नहीं कर सकते।

ग़रज़, इनसान का गुनाह अपने ऊपर उठाकर दूर करने से वह कामयाब होता है, और उसे सरफ़राज़ किया जाता है। नबी फ़रमाता है,

> इसलिए मैं उसे बड़ों में हिस्सा दूँगा,
> और वह ज़ोरावरों के साथ लूट का माल तक़सीम करेगा।
> क्योंकि उसने अपनी जान को मौत के हवाले कर दिया,
> और उसे मुजरिमों में शुमार किया गया।
> हाँ, उसने बहुतों का गुनाह उठाकर दूर कर दिया
> और मुजरिमों की शफ़ाअत की।

यों नबी ने ईसा मसीह के आने से सदियों पहले उसकी ज़िंदगी और काम पेश किया : यह कि अल-मसीह कामयाब तो होगा मगर ज़बरदस्त दुख झेलकर। अकसर लोग उसका दुख नहीं समझेंगे, न दुख का मक़सद। वह नहीं समझेंगे कि उसने हमारी ही ख़ातिर दुख उठाया, हमारी ही ख़ातिर अपनी जान दी ताकि हमारे गुनाहों को दूर कर दिया जाए और हम ख़ुदा के सामने रास्तबाज़ ठहरें। न सिर्फ़ यह। वह हमारी ख़ातिर मौत पर भी फ़तह पाएगा ताकि हम उसके फ़रज़ंद बनकर अबदी ज़िंदगी पाएँ।

► **क्या आपने उसका यह काम समझकर क़बूल किया है? क्या आपको यह माफ़ी और अबदी ज़िंदगी हासिल है? क्या आप उसका फ़रज़ंद बन गए हैं?**

यसायाह 52:13–53:12

हमारी ख़ातिर एक अजीब कामयाबी

देखो, मेरा ख़ादिम कामयाब होगा।
वह सरबुलंद, मुमताज़ और बहुत सरफ़राज़ होगा।
तुझे देखकर बहुतों के रोंगटे खड़े हो गए।
क्योंकि उसकी शक्ल इतनी ख़राब थी,
उसकी सूरत किसी भी इनसान से कहीं ज़्यादा बिगड़ी हुई थी।
लेकिन अब बहुत-सी क़ौमें उसे देखकर
हक्का-बक्का हो जाएँगी,
बादशाह दम बख़ुद रह जाएँगे।
क्योंकि जो कुछ उन्हें नहीं बताया गया
उसे वह देखेंगे,
और जो कुछ उन्होंने नहीं सुना
उसकी उन्हें समझ आएगी।
लेकिन कौन हमारे पैग़ाम पर ईमान लाया?
और रब की क़ुदरत किस पर ज़ाहिर हुई?

उसके सामने वह कोंपल की तरह फूट निकला,
उस ताज़ा और मुलायम शिगूफ़े की तरह
जो ख़ुश्क ज़मीन में छुपी हुई जड़ से निकलकर
फलने-फूलने लगती है।
न वह ख़ूबसूरत था, न शानदार।
हमने उसे देखा
तो उसकी शक्लो-सूरत में कुछ नहीं था
जो हमें पसंद आता।
उसे हक़ीर और मरदूद समझा जाता था।
दुख और बीमारियाँ उसकी साथी रहीं,
और लोग यहाँ तक उसकी तहक़ीर करते थे
कि उसे देखकर अपना मुँह फेर लेते थे।
हम उसकी कुछ क़दर नहीं करते थे।

हमारी ख़ातिर दुख

लेकिन उसने हमारी ही बीमारियाँ उठा लीं,
हमारा ही दुख भुगत लिया।
तो भी हम समझे कि यह उसकी मुनासिब सज़ा है,
कि अल्लाह ने ख़ुद उसे मारकर ख़ाक में मिला दिया है।
लेकिन उसे हमारे ही जरायम के सबब से छेदा गया,
हमारे ही गुनाहों की ख़ातिर कुचला गया।

उसे सज़ा मिली ताकि हमें सलामती हासिल हो,
और उसी के ज़ख़मों से हमें शफ़ा मिली।
हम सब भेड़-बकरियों की तरह आवारा फिर रहे थे,
हर एक ने अपनी अपनी राह इख़्तियार की।
लेकिन रब ने उसे हम सबके क़ुसूर का निशाना बनाया।

हमारी ख़ातिर जान की क़ुरबानी

उस पर ज़ुल्म हुआ,
लेकिन उसने सब कुछ बरदाश्त किया
और अपना मुँह न खोला,
उस भेड़ की तरह जिसे ज़बह करने के लिए ले जाते हैं।
जिस तरह लेला बाल कतरनेवालों के सामने ख़ामोश रहता है
उसी तरह उसने अपना मुँह न खोला।
उसे ज़ुल्म और अदालत के हाथ से छीन लिया गया।
उसके दौर के लोग—किसने ध्यान दिया
कि उसका ज़िंदों के मुल्क से ताल्लुक़ कट गया,
कि वह मेरी क़ौम के जुर्म के सबब से सज़ा का निशाना बन गया?
मुक़र्रर यह हुआ कि उसकी क़ब्र बेदीनों के पास हो,
कि वह मरते वक़्त एक अमीर के पास दफ़नाया जाए,
गो न उसने तशद्दुद किया,
न उसके मुँह में फ़रेब था।

हमारी ख़ातिर मौत पर फ़तह

रब ही की मरज़ी थी
कि उसे कुचले, उसे दुख पहुँचाए।
लेकिन जब वह अपनी जान को क़ुसूर की क़ुरबानी के तौर पर देगा
तो वह अपने फ़रज़ंदों को देखेगा,
अपने दिनों में इज़ाफ़ा करेगा।
हाँ, वह रब की मरज़ी को पूरा करने में कामयाब होगा।
इतनी तकलीफ़ बरदाश्त करने के बाद
उसे फल नज़र आएगा,
और वह सेर हो जाएगा।
अपने इल्म से मेरा रास्त ख़ादिम बहुतों का इनसाफ़ क़ायम करेगा,
क्योंकि वह उनके गुनाहों को अपने ऊपर उठाकर दूर कर देगा।
इसलिए मैं उसे बड़ों में हिस्सा दूँगा,
और वह ज़ोरावरों के साथ लूट का माल तक़सीम करेगा।
क्योंकि उसने अपनी जान को मौत के हवाले कर दिया,
और उसे मुजरिमों में शुमार किया गया।
हाँ, उसने बहुतों का गुनाह उठाकर दूर कर दिया
और मुजरिमों की शफ़ाअत की।